

भ्रूणविज्ञान : श्री मदभागवतम् {Embryology in Bhagwatam}

अजय एहसास

भ्रूणविज्ञान (Embryology) का अर्थ है अपने अपरिपक्व अवस्था में गर्भ में मानव जीव का अध्ययन ।

यह आमतौर पर कहा जाता है कि यूरोपीय देशों ने मानव जीवन के विकास को समझने का वैज्ञानिक अध्ययन किया तथा भारत में इससे सम्बन्धी कोई खोज नहीं हुई . भारतीयों ने केवल जीवन दर्शन (philosophy) के बारे में सोचा.

कहा जाता है कि भ्रूणविज्ञान पर प्राचीनतम शोध वैज्ञानिकAristotle (अरस्तू) (384 – 322 ई.पू.) ने की ।

महाभारत लगभग 5561 ईसा पूर्व लिखी गई तथा श्री मदभागवतम् लगभग 1652 ईसा पूर्व लिखी गई मानी जाती है ।

महाभारत तथा भागवत में भ्रूणविज्ञान से सम्बंधित दुनिया भर की जानकारी भरी पड़ी है ।

हमारे महान ऋषियों ने यह जान लिया था की स्त्री व पुरुष के स्राव (secretions) द्वारा रज/डिंब (ovum) तथा शुक्राणु (sperm) के मिलन फलस्वरूप भ्रूण (Fetus) की उत्पत्ति होती है तत्पश्चात जीव पनपता है ।

महाभारत के शांति पर्व 117,301, 320, 331, 356 तथा भागवत 3/31 में वर्णन मिलता है की शुक्र का एक कण शोणित के साथ क्रिया कर कलल का निर्माण करता है । शुक्र तथा शोणित को क्रमशः शुक्राणु (sperm) और अंडाणु (ovum) तथा कलल को युग्मनज या निषेचित डिंब (Zygote) भी कहा जाता है ।

भागवत में कहा गया है कि केवल एक ही रात में अर्थात् लगभग 12 घंटे के समय में ही कलल का निर्माण हो जाता है ।

कलल आगे 5 रातों के पश्चात बुलबुले (bubble stage) रूप में आ जाता है (भागवत 3/31/2)

आधुनिक विज्ञान का भी यही मत है । दस दिन में बेर के समान कुछ कठिन हो जाता है तथा 11 वें दिन का भ्रूण अंड (oval shaped) की भांति दिखाई पड़ता है ।

इस प्रकार भ्रूण में 15 दिनों में होने वाले सूक्ष्म परिवर्तनों (microscopic changes) का वर्णन मिलता है । आधुनिक विज्ञान को ये सब जानने के लिए न जाने कौन कौन सी पचासों मशीनों का प्रयोग करना पड़ता है ।

भागवत 3/31/3 में लिखा है प्रथम महीने के अंत तक भ्रूण का सिर विकसित हो जाता है ।

आधुनिक विज्ञान में 30-32 दिन के भ्रूण का सिर साफ़ साफ़ देखा जा सकता है ।

आगे लिखा है कि गर्भावस्था के दूसरे महीने में भ्रूण के हाथ-पाँव और शरीर के अन्य भागों को विकसित होने लगते हैं

गर्भावस्था के तीसरे महीने में नाखून, बाल, हड्डियाँ और त्वचा विकसित होने लगती हैं तथा जननांग विकसित होने लगते हैं तथा कुछ समय पश्चात गुदा (Anus) का निर्माण होता है ।

आधुनिक मत के अनुसार 8 सप्ताह (56 दिन = लगभग 2 माह) के भ्रूण में जननांग पाए जाते हैं तथा पूर्णतया प्राप्त करने में तीसरा महीना आ ही जाता है ।

तथा आगे लिखा है चोथे महीने में सात प्रकार की धातुओं (tissues) का निर्माण होता है जो इस प्रकार हैं :

रस (tissue fluids), रक्त (blood), स्नायु (muscles), मेदा (fatty tissue), अस्थी (bones), मज्जा (nervous tissue) तथा शुक्र (reproductive tissue). आधुनिक विज्ञान का भी यही मत है ।

पांचवे महीने में शिशु में भूख तथा प्यास विकसित होती है । हालांकि कुछ समय पूर्व तक आधुनिक विज्ञान इसे समझ नहीं पाई थी परन्तु नवीनतम प्रयोगों के आधार पर यह सत्य सिद्ध होता है । देखें कैसे ?

जातविष्ठा (मल) पेट में ग्रहणी से मलाशय तक पाया जाता है जिसमें स्वयं भ्रूण के ही बाल (lanugo hairs) तथा उपकला कोशिकाएँ भी शामिल होती हैं । ये सभी भ्रूण की आंत तक एमनियोटिक द्रव निगलने के फलस्वरूप ही पहुँच सकते हैं । एमनियोटिक द्रव (amniotic fluid) वह द्रव है जिसमें भ्रूण स्थित होता है । बाल (lanugo hairs) और उपकला कोशिकाएँ भ्रूण की त्वचा द्वारा ही एमनियोटिक द्रव में गिरती हैं जिसे भ्रूण ग्रहण करता है । और इन बालों (lanugo hairs) तथा उपकला कोशिकाओं का शिशु की आंतों में पाया जाना जठरांत्र संबंधी मार्ग के कार्य सुचारु कार्य करने को दर्शाता है ।

अर्थात् पांचवे महीने में शिशु का जठर तंत्र तथा आंते आदि कार्य करने लगते हैं तथा यह भी निश्चित है की शिशु का एमनियोटिक द्रव ग्रहण करना एक स्व प्रक्रिया नहीं है अपितु शिशु की भूख तथा प्यास को दर्शाता है । शिशु को भूख तथा प्यास की अनुभूति होने के फलस्वरूप ही वह एमनियोटिक द्रव ग्रहण करता है ।

छठे महीने में शिशु गर्भ में घूर्णन करने लगता है अर्थात् करवट लेने लगता है तथा कई प्रकार के ढकाव (एमनियोटिक द्रव/उतकों आदि) द्वारा घिरा रहता है

सातवें महीने में शिशु का मस्तिष्क कार्य करने लगता है और 7 महीने का शिशु व्यवहार्य हो जाता है ।

आधुनिक विज्ञान इस तथ्य को हाल ही में हुए एक प्रयोग के पश्चात समझ पाई है ।

श्री कृष्ण के भांजे अभिमन्यु ने युद्ध कला गर्भ में ही सीखी थी यह बात भी इससे सिद्ध होती है यहाँ देखें ।

श्री कृष्ण के भांजे अभिमन्यु की कथा की पुष्टि

अभिमन्यु ने युद्ध कला गर्भ में सीखी इस तथ्य को विदेशी तो दूर हम भारतीय भी अब तक मिथ्या मानते थे । किन्तु आधुनिक विज्ञान में सिद्ध होने के पश्चात हमने इसे माना ।

कितने मूर्ख हैं हम

हमने 200 वर्षों तक गोरो के डंडे खाए हैं , गुलाम मानसिकता इतनी जल्दी थोड़ी जाएगी !!!

हमारी प्राचीन परंपराओं में गर्भवती स्त्री को अच्छी पुस्तकें तथा रामचरितमानस आदि पढने के सलाह दी जाती थी । इससे भी यह स्पष्ट है की हमारे पूर्वज इस तथ्य को जानते थे की 6-7 माह का शिशु सिखने लगता है अर्थात व्यवहार्य हो जाता है ।

आगे कहा गया है कि भ्रूण अपनी माँ द्वारा किये गये भोजन आदि के पोषण से ही बढ़ता है. तथा शिशु स्वयं द्वारा किये गए मूत्र और मल तथा एमनियोटिक द्रव के बिच ही बढ़ता रहता है ।

कुछ वर्ष पूर्व तक आधुनिक विज्ञान का मानना तथा की शिशु अपनी माता के अपशिस्ट पदार्थ में पलता है किन्तु अब यह सिद्ध हो चुका है की वह अपशिस्ट माता का नही वरन स्वयं शिशु का ही होता है ।

8वे श्लोक में कपिल मुनि लिखते है कि शिशु अपनी पीठ और सिर के बल पर ही स्थित होता है .

9वें श्लोक का कहना है कि शिशु साँस लेने में असमर्थ होता है क्योंकि शिशु एमनियोटिक द्रव में निहित होता है जिसके कारन साँस लेने की आवश्यकता नही होती .शिशु को ऑक्सीजन और अन्य पोषक तत्व माँ के खून द्वारा प्राप्त होते है .

किन्तु कितने दुःख की बात है आज के अपनी स्त्रियों के गुलाम पुरुषों के राजमहल में अपनी माँ के लिए एक कमरा भी नही ?? डूब मरो जल्दी से जल्दी !!!

श्लोक 22 में कपिल मुनि लिखते हैं कि 10 महीने में भ्रूण को नीचे की ओर प्रसूति वायु द्वारा धकेला जाता है ।

इस प्रकार गर्भ में भ्रूण से शिशु निर्माण की प्रक्रिया सूक्ष्म रूप से भागवत 2/10/17 से 22, 3/6/12 से 15 तथा 3/26/54 से 60 में मिलता है जिसमें मुह,नाक,आँखे,कान, तालू, जीभ और गला आदि शामिल है । तथा (3/6/1 से 5) तक में जिव निर्माण में योगदान देने वाले 23 गुणसूत्रों का भी वर्णन मिलता है ।

आधुनिक विज्ञान में कहा गया है एक शुक्राणु के 22 गुणसूत्र, एक अंड के साथ मिलकर भ्रूण निर्माण करते हैं । बिलकुल यही तथ्य आज से लगभग 7500 वर्ष पूर्व लिखी गई महाभारत में भी मिलता है ।

भागवत (2/10, 3/6, 3/26) में लिखा है जननांग तथा गुदा आदि के पश्चात हृदय का निर्माण होता है । यह तथ्य 1972 में H.P.Robinson द्वारा Glasgow University में ultrasonic Doppler technique के माध्यम से सिद्ध किया जा चुके हैं ।

भागवत में लिखा है दोनों कानों में प्रत्येक का कार्य ध्वनी तथा दिशा का ज्ञान करना है यह तथ्य 1936 में Ross तथा Tait नामक वैज्ञानिकों द्वारा सिद्ध किया गया की दिशा का गया आन्तरिक कान में स्थित Labyrinth नामक संरचना द्वारा होता है । इसका वर्णन ऐतरेय उपनिषद् (लगभग 6000 से 7000 ईसा पूर्व) 1/1/4 तथा 1/2/4 में भी मिलता है ।

ऐसे कई प्रश्न हैं जिसका उत्तर आधुनिक विज्ञान के पास नहीं है क्योंकि उनके पास केवल भौतिक ज्ञान है अध्यात्मिक नहीं । हमारे ऋषियों के पास प्रत्येक प्रश्न का उत्तर था क्योंकि वे भौतिक के साथ अध्यात्मिक ज्ञान में भी धुरंदर थे ।

उदहारण के लिए : हम जानते हैं की निषेचन के पश्चात करोड़ों शुक्राणु, एक मादा अंड की ओर दौड़ते हैं किन्तु केवल एक ही शुक्राणु अंड में प्रवेश करने में सफल होता है और भ्रूण का निर्माण करता है ।

आधुनिक विज्ञानियों के पास इसका कोई उतर नहीं की करोड़ों की दौड़ में एक ही जीता बाकि मुह देखते रह गये ?

परन्तु ऋषियों के पास इसका सॉलिड उतर था । उन्होंने कहा जीवात्मा अमर है जैसा की श्री कृष्ण ने गीतामें भी कहा है । मृत्यु के पश्चात आत्मा भौतिक शरीर को छोड़कर भुवर्लोक में गमन करती है । वर्षा द्वारा पुनः पृथ्वी पर आती है वर्षा जल पेड-पौधों द्वारा अवशोषित किया जाता है इस प्रकार जीवात्मा खाद्यान्न (food grain) में प्रवेश करती है। जो भोजन के साथ पुरुष के शरीर में पहुँचती है और शुक्राणु बनता है । ओर जब करोड़ों शुक्राणुओ की दौड़ प्रारंभ होती है वही एक शुक्राणु विजयी होता है जिसमें प्राण/जीवात्मा निहित होती है । वही जीवआत्मा (जो परमआत्मा (ईश्वर) का अंश है) उस शुक्राणु का मार्ग दर्शन कर विजयी बनाती है ।

जबकि आधुनिक विज्ञान का कहना है की यह एक अवसर मात्र ही है की कोई एक जीत गया ।

इसी प्रकार का एक और प्रश्न है की प्रसव (delivery) के लिए कोन उतरदायी है विज्ञान के पास दो उतर है या तो माँ या फिर स्वयं शिशु ।

यदि माँ प्रसव के लिए उतरदायी है तो प्रत्येक प्रसव काल (gestation period) में परिवर्तन क्यों ?

और यदि शिशु उतरदायी है तो सातवे महीने में शिशु का मस्तिष्क कार्य करने लगता है फिर भी वह दो महीने और गर्भ में क्यों ठहरता है ?

ऋषियों का कहना है की जब शिशु में प्राण प्रवेश करता है तब वह एमनियोटिक द्रव से बाहर निकलने की चेष्टा करता है और दुनिया में आता है । इस प्रकार प्रसव, प्राण पर निर्भर करता है न की माता पर और न ही शिशु पर ।

भागवत 3/26/63 से 70 में लिखा है की जब शिशु का प्रत्येक अंग आदि कार्य करने प्रारंभ कर देते है तब तक भी वह द्रव से बाहर नहीं निकलता जब तक अंततः उसके चित में क्षेत्रज आत्मा का प्रवेश नहीं होता ।

उपरोक्त समस्त अध्ययन microscope आदि के अभाव में नहीं किये जा सकते । इससे यह भी स्पष्ट है की उस समय microscope जैसे यन्त्र भी थे !

कोशिका विभाजन

भागवत 3/6/7 में लिखा है कि -

भ्रूण सर्वप्रथम एक बार विभाजित होता है

ऐसा दस बार होता है

और फिर तिन बार और होता है ।

उपरोक्त को तीन अलग अलग बार लिखा गया है क्योंकि विभाजन तीन परतों/चरणों में होता है ।

प्रत्येक विभाजन में पहले निर्मित कोशिकाओं से संख्या दुगुनी हो जाती है ।

इन्ही बढ़ती हुई कोशिकाओं से भ्रूण के शरीर का विकास होता है ।

आधुनिक विज्ञान में इन तीन चरणों को ectoderm, endoderm तथा mesoderm कहा जाता है ।

मात्र साफ़, महंगे विदेशी वस्त्र पहनने तथा टाई लटका लेने से कोई बुद्धिमान नहीं हो जाता । उपरोक्त सारे अनुसन्धान हमारे ऋषि लोगो ने भगवा धारण किये ही किये थे ।

इससे भी अधिक जानकारी के लिए श्री मदभागवत पढ़े ।

आज यदि हमारे ग्रंथो पर पुनः शोध आरंभ की जाये तो भारत निश्चय ही पुनः विश्व गुरु सकता है ।

किन्तु हो उल्टा ही रहा है विदेशी हमारे ग्रंथो पर शोध करने में डूबे हुए है ये एक दक्षिण अफ्रीका की वेब साईट है

<http://www.hinduism.co.za/index.html>

जो सनातन धर्म को समर्पित है इस साईट में जा कर जरा बायीं और मेन्यु को देखें ।

.[co.za](#) domain south africa का है ठीक उसी प्रकार जैसे [co.in](#) india के लिए है यहाँ देखें :

<http://www.africaregistry.com/>

इसी प्रकार एक अमेरिकन stephen knapp ने वेदों आदि पर गहन शोध की है :

<http://stephen-knapp.com/>

25-30 पुस्तकें भी लिख चुके है.

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें

